

श्रीहरिः

श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

# महाभारत

( प्रथम खण्ड )

[ आदिपर्व और सभापर्व ]

( सचित्र, सरल हिंदी-अनुवादसहित )



अनुवादक—



पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'

# महाभारतके सब पर्वोंके प्रत्येक अध्यायकी पूरी विषयसूची आदिपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
( अनुक्रमणिकापर्व )			१४-जरत्कारुद्वारा वासुकिकी बहिनका पाणिग्रहण ...	७७	
१-ग्रन्थका उपक्रम; ग्रन्थमें कहे हुए अधिकांश विषयोंकी संक्षिप्त सूची तथा इसके पाठकी महिमा	१		१५-आस्तीकका जन्म तथा मातृशापसे सर्पसत्रमें नष्ट होनेवाले नागवंशकी उनके द्वारा रक्षा ...	७८	
( पर्वसंग्रहपर्व )			१६-कद्रू और विनताको कश्यपजीके वरदानसे अभीष्ट पुत्रोंकी प्राप्ति ...	७९	
२-समन्तपञ्चक क्षेत्रका वर्णन; अक्षौहिणी सेनाका प्रमाण; महाभारतमें वर्णित पर्वों और उनके संक्षिप्त विषयोंका संग्रह तथा महाभारतके श्रवण एवं पठनका फल ...	२३		१७-मेरु पर्वतपर अमृतके लिये विचार करनेवाले देवताओंको भगवान् नारायणका समुद्र-मन्थनके लिये आदेश ...	८०	
( पौष्यपर्व )			१८-देवताओं और दैत्योंद्वारा अमृतके लिये समुद्रका मन्थन; अनेक रत्नोंके साथ अमृतकी उत्पत्ति और भगवान् का मोहिनीरूप धारण करके दैत्यों-के हाथसे अमृत ले लेना ...	८१	
३-जनमेजयको सरमाका शाप; जनमेजयद्वारा सोमश्रवाका पुरोहितके पदपर वरण; आरुणि; उपमन्यु; वेद और उत्तङ्ककी गुरुभक्ति तथा उत्तङ्कका सर्पयज्ञके लिये जनमेजयको प्रोत्साहन देना ...	४६		१९-देवताओंका अमृतपान; देवासुर-संग्राम तथा देवताओंकी विजय ...	८५	
( पौलोमपर्व )			२०-कद्रू और विनताकी होड़; कद्रूद्वारा अपने पुत्रोंको शाप एवं ब्रह्माजीद्वारा उसका अनुमोदन ...	८७	
४-कथा-प्रवेश ...	६२		२१-समुद्रका विस्तारसे वर्णन ...	८८	
५-भृगुके आश्रमपर पुलोमा दानवका आगमन और उसकी अग्निदेवके साथ बातचीत ...	६३		२२-नागोंद्वारा उच्चैःश्रवाकी पूँछको काली बनाना; कद्रू और विनताका समुद्रको देखते हुए आगे बढ़ना ...	९०	
६-महर्षि च्यवनका जन्म; उनके तेजसे पुलोमा राक्षसका भस्म होना तथा भृगुका अग्निदेवको शाप देना ...	६५		२३-पराजित विनताका कद्रूकी दासी होना; गरुडकी उत्पत्ति तथा देवताओंद्वारा उनकी स्तुति ...	९१	
७-शापसे कुपित हुए अग्निदेवका अदृश्य होना और ब्रह्माजीका उनके शापको संकुचित करके उन्हें प्रसन्न करना ...	६६		२४-गरुडके द्वारा अपने तेज और शरीरका संकोच तथा सूर्यके क्रोधजनित तीव्र तेजकी शान्तिके लिये अरुणका उनके रथपर स्थित होना ...	९३	
८-प्रमद्वाराका जन्म; रुद्रके साथ उसका वाक्यदान तथा विवाहके पहले ही सौंपके काटनेसे प्रमद्वाराकी मृत्यु ...	६९		२५-सूर्यके तापसे मूर्च्छित हुए सपोंकी रक्षाके लिये कद्रूद्वारा इन्द्रदेवकी स्तुति ...	९५	
९-रुद्रकी आधी आयुसे प्रमद्वाराका जीवित होना; रुद्रके साथ उसका विवाह; रुद्रका सपोंको मारनेका निश्चय तथा रुद्र-हुण्डुभ-संवाद ...	७०		२६-इन्द्रद्वारा की हुई वर्षासे सपोंकी प्रसन्नता ...	९६	
१०-रुद्र मुनि और हुण्डुभका संवाद ...	७२		२७-रामणीयक द्वीपके मनोरम वनका वर्णन तथा गरुडका दास्यभावसे छूटनेके लिये सपोंसे उपाय पूछना ...	९७	
११-हुण्डुभकी आत्मकथा तथा उसके द्वारा रुद्रको अहिंसाका उपदेश ...	७३		२८-गरुडका अमृतके लिये जाना और अपनी माताकी आज्ञाके अनुसार निषादोंका भक्षण करना ...	९८	
१२-जनमेजयके सर्पसत्रके विषयमें रुद्रकी जिज्ञासा और पिताद्वारा उसकी पूर्ति ...	७४		२९-कश्यपजीका गरुडको हाथी और कछुएके पूर्व-जन्मकी कथा सुनाना; गरुडका उन दोनोंको पकड़कर एक दिव्य वटवृक्षकी शाखापर ले जाना और उस शाखाका टूटना ...	१००	
( आस्तीकपर्व )					
१३-जरत्कारुका अपने पितरोंके अनुरोधसे विवाहके लिये उद्यत होना ...	७५				

- ३०-गरुडका काश्यपजीसे मिलना; उनकी प्रार्थनासे बालखिल्य ऋषियोंका शाखा छोड़कर तपके लिये प्रस्थान और गरुडका निर्जन पर्वतपर उस शाखाको छोड़ना ... १०३
- ३१-इन्द्रके द्वारा बालखिल्योंका अपमान और उनकी तपस्याके प्रभावसे अरुण-गरुडकी उत्पत्ति ... १०६
- ३२-गरुडका देवताओंके साथ युद्ध और देवताओंकी पराजय ... १०९
- ३३-गरुडका अमृत लेकर लौटना; मार्गमें भगवान् विष्णुसे वर पाना एवं उनपर इन्द्रके द्वारा वज्र-प्रहार ... ११०
- ३४-इन्द्र और गरुडकी मित्रता; गरुडका अमृत लेकर नागोंके पास आना और विनताको दासी-भावसे छुड़ाना तथा इन्द्रद्वारा अमृतका अपहरण ११२
- ३५-मुख्य-मुख्य नागोंके नाम ... ११४
- ३६-शेषनागकी तपस्या; ब्रह्माजीसे वर-प्राप्ति तथा पृथ्वीको सिरपर धारण करना ... ११५
- ३७-माताके शापसे बचनेके लिये वासुकि आदि नागोंका परस्पर परामर्श ... ११७
- ३८-वासुकिकी बहिन जरत्कारुका जरत्कारु मुनिके साथ विवाह करनेका निश्चय ... १२०
- ३९-ब्रह्माजीकी आज्ञासे वासुकिका जरत्कारु मुनिके साथ अपनी बहिनको व्याहनेके लिये प्रयत्नशील होना ... १२१
- ४०-जरत्कारुकी तपस्या; राजा परीक्षितका उपाख्यान तथा राजाके द्वारा मुनिके कंधेपर मृतक साँप रखनेके कारण दुखी हुए कृशका शृङ्गीको उत्तेजित करना ... १२२
- ४१-शृङ्गी ऋषिका राजा परीक्षितको शाप देना और शमीकका अपने पुत्रको शान्त करते हुए शापको अनुचित बताना ... १२४
- ४२-शमीकका अपने पुत्रको समझाना और गौरमुखको राजा परीक्षितके पास भेजना; राजाद्वारा आत्म-रक्षाकी व्यवस्था तथा तक्षक नाग और काश्यपकी बातचीत ... १२७
- ४३-तक्षकका धन देकर काश्यपको लौटा देना और छलसे राजा परीक्षितके समीप पहुँचकर उन्हें डँसना १२९
- ४४-जनमेजयका राज्याभिषेक और विवाह ... १३२
- ४५-जरत्कारुको अपने पितरोंका दर्शन और उनसे वार्तालाप ... १३३
- ४६-जरत्कारुका शर्तके साथ विवाहके लिये उद्यत होना और नागराज वासुकिका जरत्कारु नामकी कन्याको लेकर आना ... १३५
- ४७-जरत्कारु मुनिका नागकन्याके साथ विवाह; नाग-कन्या जरत्कारुद्वारा पतिसेवा तथा पतिका उसे त्याग कर तपस्याके लिये गमन ... १३७
- ४८-वासुकि नागकी चिन्ता; बहिनद्वारा उसका निवारण तथा आस्तीकका जन्म एवं विद्याध्ययन १४०
- ४९-राजा परीक्षितके धर्ममय आचार तथा उत्तम गुणोंका वर्णन; राजाका शिकारके लिये जाना और उनके द्वारा शमीक मुनिका तिरस्कार ... १४१
- ५०-शृङ्गी ऋषिका परीक्षितको शाप; तक्षकका काश्यपको लौटाकर छलसे परीक्षितको डँसना और पिताकी मृत्युका वृत्तान्त सुनकर जनमेजयकी तक्षकसे बदला लेनेकी प्रतिज्ञा ... १४४
- ५१-जनमेजयके सर्पयज्ञका उपक्रम ... १४७
- ५२-सर्पयज्ञका आरम्भ और उसमें सर्पोंका विनाश १४८
- ५३-सर्पयज्ञके ऋत्विजोंकी नामावली; सर्पोंका भयंकर विनाश; तक्षकका इन्द्रकी शरणमें जाना तथा वासुकिका अपनी बहिनसे आस्तीकको यज्ञमें भेजनेके लिये कहना ... १४९
- ५४-माताकी आज्ञासे मामाको सान्त्वना देकर आस्तीकका सर्पयज्ञमें जाना ... १५१
- ५५-आस्तीकके द्वारा यजमान; यज्ञ; ऋत्विज; सदस्य-गण और अग्निदेवकी स्तुति-प्रशंसा ... १५३
- ५६-राजाका आस्तीकको वर देनेके लिये तैयार होना; तक्षक नागकी व्याकुलता तथा आस्तीकका वर माँगना ... १५५
- ५७-सर्पयज्ञमें दग्ध हुए प्रधान-प्रधान सर्पोंके नाम ... १५८
- ५८-यज्ञकी समाप्ति एवं आस्तीकका सर्पोंसे वर प्राप्त करना ... १५९
- ( अंशावतरणपर्व )
- ५९-महाभारतका उपक्रम ... १६२
- ६०-जनमेजयके यज्ञमें व्यासजीका आगमन; सत्कार तथा राजाकी प्रार्थनासे व्यासजीका वैशम्पायनजीसे महाभारत-कथा सुनानेके लिये कहना ... १६२
- ६१-कौरव-पाण्डवोंमें फूट और युद्ध होनेके वृत्तान्तका सूत्ररूपमें निर्देश ... १६४
- ६२-महाभारतकी महत्ता ... १६७
- ६३-राजा उपरिचरका चरित्र तथा सत्यवती; व्यासादि प्रमुख पात्रोंकी संक्षिप्त जन्म-कथा ... १७२
- ६४-ब्राह्मणोंद्वारा क्षत्रिय-वंशकी उत्पत्ति और वृद्धि तथा उस समयके धार्मिक राज्यका वर्णन; असुरोंका जन्म और उनके भारसे पीड़ित पृथ्वीका ब्रह्माजीकी शरणमें जाना तथा ब्रह्माजीका देवताओंको अपने अंशसे पृथ्वीपर जन्म लेनेका आदेश ... १८०

( सम्भवपर्व )

- ६५-मरीचि आदि महर्षियों तथा अदिति आदि दक्ष-  
कन्याओंके वंशका विवरण ... १८३
- ६६-महर्षियों तथा कश्यप-पत्नियोंकी संतान-परम्पराका  
वर्णन ... १८७
- ६७-देवता और दैत्य आदिके अंशावतारोंका दिग्दर्शन १९१
- ६८-राजा दुष्यन्तकी अद्भुत शक्ति तथा राज्यशासन-  
की क्षमताका वर्णन ... २०१
- ६९-दुष्यन्तका शिकारके लिये वनमें जाना और  
विविध हिंसक वन-जन्तुओंका वध करना ... २०२
- ७०-तपोवन और कण्वके आश्रमका वर्णन तथा राजा  
दुष्यन्तका उस आश्रममें प्रवेश ... २०४
- ७१-राजा दुष्यन्तका शकुन्तलाके साथ वार्तालाप;  
शकुन्तलाके द्वारा अपने जन्मका कारण बतलाना  
तथा उसी प्रसङ्गमें विश्वामित्रकी तपस्यासे इन्द्र-  
का चिन्तित होकर मेनकाको मुनिका तपोभंग  
करनेके लिये भेजना ... २०७
- ७२-मेनका-विश्वामित्र-मिलन; कन्याकी उत्पत्ति;  
शकुन्त पक्षियोंके द्वारा उसकी रक्षा और  
कण्वका उसे अपने आश्रमपर लेकर शकुन्तला  
नाम रखकर पालन करना ... २११
- ७३-शकुन्तला और दुष्यन्तका गान्धर्व विवाह और  
महर्षि कण्वके द्वारा उसका अनुमोदन ... २१३
- ७४-शकुन्तलाके पुत्रका जन्म; उसकी अद्भुत शक्ति;  
पुत्रसहित शकुन्तलाका दुष्यन्तके यहाँ जाना;  
दुष्यन्त-शकुन्तला-संवाद; आकाशवाणीद्वारा  
शकुन्तलाकी शुद्धिका समर्थन और भरतका  
राज्याभिषेक ... २१७
- ७५-दक्ष, वैवस्वत मनु तथा उनके पुत्रोंकी उत्पत्ति;  
पुरूरवा, नहुष और ययातिके चरित्रोंका  
संक्षेपसे वर्णन ... २३६
- ७६-कचका शिष्यभावसे शुक्राचार्य और देवयानी-  
की सेवामें संलग्न होना और अनेक कष्ट सहने-  
के पश्चात् मृतसंजीविनी विद्या प्राप्त करना ... २३५
- ७७-देवयानीका कचसे पाणिग्रहणके लिये अनुरोध;  
कचकी अस्वीकृति तथा दोनोंका एक-दूसरेको  
शाप देना ... २४१
- ७८-देवयानी और शर्मिष्ठाका कलह; शर्मिष्ठाद्वारा  
कुएँमें गिराई गयी देवयानीको ययातिका  
निकालना और देवयानीका शुक्राचार्यजीके साथ  
वार्तालाप ... २४३
- ७९-शुक्राचार्यद्वारा देवयानीको समझाना और  
देवयानीका असंतोष ... २४६
- ८०-शुक्राचार्यका वृषपर्वाको फटकारना तथा उसे  
छोड़कर जानेके लिये उद्यत होना और वृषपर्वाके  
आदेशसे शर्मिष्ठाका देवयानीकी दासी बनकर  
शुक्राचार्य तथा देवयानीको संतुष्ट करना ... २४८

- ८१-सखियोंसहित देवयानी और शर्मिष्ठाका वन-  
विहार; राजा ययातिका आगमन; देवयानीकी  
उनके साथ बातचीत तथा विवाह ... २५१
- ८२-ययातिसे देवयानीको पुत्रप्राप्ति; ययाति और  
शर्मिष्ठाका एकान्तमिलन और उनसे एक पुत्र-  
का जन्म ... २५४
- ८३-देवयानी और शर्मिष्ठाका संवाद; ययातिसे  
शर्मिष्ठाके पुत्र होनेकी बात जानकर देवयानी-  
का रुठकर पिताके पास जाना; शुक्राचार्यका  
ययातिको बूढ़े होनेका शाप देना ... २५६
- ८४-ययातिका अपने पुत्र यदु, त्वर्यसु, द्रुह्यु और  
अनुसे अपनी युवावस्था देकर वृद्धावस्था लेनेके  
लिये आग्रह और उनके अस्वीकार करनेपर  
उन्हें शाप देना; फिर अपने पुत्र पूरुको जरावस्था  
देकर उनकी युवावस्था लेना तथा उन्हें वर-  
प्रदान करना ... २६०
- ८५-राजा ययातिका विषय-सेवन और वैराग्य तथा  
पूरुका राज्याभिषेक करके वनमें जाना ... २६३
- ८६-वनमें राजा ययातिकी तपस्या और उन्हें  
स्वर्गलोककी प्राप्ति ... २६६
- ८७-इन्द्रके पूछनेपर ययातिका अपने पुत्र पूरुको  
दिये हुए उपदेशकी चर्चा करना ... २६७
- ८८-ययातिका स्वर्गसे पतन और अष्टकका  
उनसे प्रश्न करना ... २६८
- ८९-ययाति और अष्टकका संवाद ... २७०
- ९०-अष्टक और ययातिका संवाद ... २७३
- ९१-ययाति और अष्टकका आश्रमधर्म-  
सम्बन्धी संवाद ... २७६
- ९२-अष्टक-ययाति-संवाद और ययातिद्वारा दूसरोंके  
दिये हुए पुण्यदानको अस्वीकार करना ... २७८
- ९३-राजा ययातिका वसुमान् और शिविके प्रतिग्रहको  
अस्वीकार करना तथा अष्टक आदि चारों  
राजाओंके साथ स्वर्गमें जाना ... २८०
- ९४-पूरुवंशका वर्णन ... २८४
- ९५-दक्ष प्रजापतिसे लेकर पूरुवंश; भरतवंश  
एवं पाण्डुवंशकी परम्पराका वर्णन ... २८८
- ९६-महाभियको ब्रह्माजीका शाप तथा शापग्रस्त  
वसुओंके साथ गङ्गाकी बातचीत ... २९५
- ९७-राजा प्रतापका गङ्गाको पुत्रवधूके रूपमें स्वीकार  
करना और शान्तनुका जन्म; राज्याभिषेक तथा  
गङ्गासे मिलना ... २९६
- ९८-शान्तनु और गङ्गाका कुछ शतोंके साथ  
सम्बन्ध; वसुओंका जन्म और शापसे उद्धार  
तथा भीष्मकी उत्पत्ति ... २९९



- १९-महर्षि वसिष्ठद्वारा वसुओंको शाप प्राप्त होनेकी कथा ३०१
- १००-शान्तनुके रूप, गुण और सदाचारकी प्रशंसा;  
गङ्गाजीके द्वारा सुशिक्षित पुत्रकी प्राप्ति तथा  
देवव्रतकी भीष्म-प्रतिज्ञा ... ३०४
- १०१-सत्यवतीके गर्भसे चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य-  
की उत्पत्ति; शान्तनु और चित्राङ्गदका निधन  
तथा विचित्रवीर्यका राज्याभिषेक ... ३१३
- १०२-भीष्मके द्वारा स्वयंवरसे काशिराजकी कन्याओं-  
का हरण; युद्धमें सब राजाओं तथा शात्वकी  
पराजय; अम्बिका और अम्बालिकाके साथ  
विचित्रवीर्यका विवाह तथा निधन ... ३१४
- १०३-सत्यवतीका भीष्मसे राज्य ग्रहण और  
संतानोत्पादनके लिये आग्रह तथा भीष्मके द्वारा  
अपनी प्रतिज्ञा बतलाते हुए उसकी अस्वीकृति ३१९
- १०४-भीष्मकी सम्मतिसे सत्यवतीद्वारा व्यासका  
आवाहन और व्यासजीका माताकी आज्ञासे कुरु-  
वंशकी वृद्धिके लिये विचित्रवीर्यकी पत्नियोंके  
गर्भसे संतानोत्पादन करनेकी स्वीकृति देना ... ३२१
- १०५-व्यासजीके द्वारा विचित्रवीर्यके क्षेत्रसे धृतराष्ट्र;  
पाण्डु और विदुरकी उत्पत्ति ... ३२५
- १०६-महर्षि माण्डव्यका शूलीपर चढ़ाया जाना ... ३२७
- १०७-माण्डव्यका धर्मराजको शाप देना ... ३२८
- १०८-धृतराष्ट्र आदिके जन्म तथा भीष्मजीके धर्मपूर्ण  
शासनसे कुरुदेशकी सर्वाङ्गीण उन्नतिकी दिग्दर्शन ३३०
- १०९-राजा धृतराष्ट्रका विवाह ... ३३२
- ११०-कुन्तीको दुर्वाससे मन्त्रकी प्राप्ति; सूर्यदेवका  
आवाहन तथा उनके संयोगसे कर्णका जन्म एवं  
कर्णके द्वारा इन्द्रको कवच और कुण्डलोंका दान ३३३
- १११-कुन्तीद्वारा स्वयंवरमें पाण्डुका वरण और उनके  
साथ विवाह ... ३३६
- ११२-माद्रीके साथ पाण्डुका विवाह तथा राजा  
पाण्डुकी दिग्विजय ... ३३७
- ११३-राजा पाण्डुका पत्नियोंसहित वनमें निवास तथा  
विदुरका विवाह ... ३४०
- ११४-धृतराष्ट्रके गान्धारीसे एक सौ पुत्र तथा एक  
कन्याकी तथा सेवा करनेवाली वैश्यजातीय युवती-  
से युयुत्सु नामक एक पुत्रकी उत्पत्ति ... ३४१
- ११५-दुःशलके जन्मकी कथा ... ३४४
- ११६-धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंकी नामावली ... ३४६
- ११७-राजा पाण्डुके द्वारा मृगरूपधारी मुनिका वध  
तथा उनसे शापकी प्राप्ति ... ३४७
- ११८-पाण्डुका अनुताप; संन्यास लेनेका निश्चय  
तथा पत्नियोंके अनुरोधसे वानप्रस्थ-  
आश्रममें प्रवेश ... ३५०
- ११९-पाण्डुका कुन्तीको पुत्र-प्राप्तिके लिये प्रयत्न  
करनेका आदेश ... ३५३
- १२०-कुन्तीका पाण्डुको व्युषिताश्वके मृत शरीरसे  
उसकी पतिव्रता पत्नी भद्राके द्वारा  
पुत्र-प्राप्तिका कथन ... ३५६
- १२१-पाण्डुका कुन्तीको समझाना और कुन्तीका  
पतिकी आज्ञासे पुत्रोत्पत्तिके लिये धर्मदेवताका  
आवाहन करनेके लिये उद्यत होना ... ३५९
- १२२-युधिष्ठिर, भीम और अर्जुनकी उत्पत्ति ... ३६१
- १२३-नकुल और सहदेवकी उत्पत्ति तथा पाण्डु-  
पुत्रोंके नामकरण-संस्कार ... ३६६
- १२४-राजा पाण्डुकी मृत्यु और माद्रीका  
उनके साथ चितारोहण ... ३७०
- १२५-ऋषियोंका कुन्ती और पाण्डवोंको लेकर  
हस्तिनापुर जाना और उन्हें भीष्म आदिके  
हाथों सौंपना ... ३७५
- १२६-पाण्डु और माद्रीकी अस्थियोंका दाह-संस्कार  
तथा भाई-बन्धुओंद्वारा उनके  
लिये जलाञ्जलिदान ... ३७७
- १२७-पाण्डवों तथा धृतराष्ट्रपुत्रोंकी बालक्रीडा;  
दुर्योधनका भीमसेनको विष खिलाना तथा  
गङ्गामें ढकेलना और भीमका नागलोकमें पहुँच-  
कर आठ कुण्डोंके दिव्य रसका पान करना ... ३७९
- १२८-भीमसेनके न आनेसे कुन्ती आदिकी चिन्ता;  
नागलोकसे भीमसेनका आगमन तथा उनके  
प्रति दुर्योधनकी कुचेष्टा ... ३८४
- १२९-कृपाचार्य, द्रोण और अश्वत्थामाकी उत्पत्ति तथा  
द्रोणको परशुरामजीसे अस्त्र-शस्त्रकी प्राप्ति की कथा ३८७
- १३०-द्रोणका द्रुपदसे तिरस्कृत हो हस्तिनापुरमें आना;  
राजकुमारोंसे उनकी भेंट; उनकी बीटा और  
अँगूठीको कुँएँमेंसे निकालना एवं भीष्मका उन्हें  
अपने यहाँ सम्मानपूर्वक रखना ... ३९१
- १३१-द्रोणाचार्यद्वारा राजकुमारोंकी शिक्षा; एकलव्य-  
की गुरुभक्ति तथा आचार्यद्वारा शिष्योंकी परीक्षा ३९७
- १३२-अर्जुनके द्वारा लक्ष्यवेध; द्रोणका ग्राहसे झुटकारा  
और अर्जुनको ब्रह्मशिर नामक अस्त्रकी प्राप्ति ४०२
- १३३-राजकुमारोंका रङ्गभूमिमें अस्त्र-कौशल दिखाना ४०४
- १३४-भीमसेन, दुर्योधन तथा अर्जुनके द्वारा अस्त्र-  
कौशलका प्रदर्शन ... ४०७
- १३५-कर्णका रङ्गभूमिमें प्रवेश तथा राज्याभिषेक ... ४०९
- १३६-भीमसेनके द्वारा कर्णका तिरस्कार और  
दुर्योधनद्वारा उसका सम्मान ... ४१३

- १३७-द्रोणका शिष्योंद्वारा द्रुपदपर आक्रमण करवाना;  
अर्जुनका द्रुपदको बंधी बनाकर लाना और  
द्रोणद्वारा द्रुपदको आधा राज्य देकर मुक्त कर देना ४१५  
१३८-युधिष्ठिरका युवराजपदपर अभिषेक; पाण्डवोंके  
शौर्य, कीर्ति और बलके विस्तारसे  
धृतराष्ट्रको चिन्ता ... ४२०  
१३९-कणिकका धृतराष्ट्रको कूटनीतिका उपदेश ... ४२२

### ( जतुगृहपर्व )

- १४०-पाण्डवोंके प्रति पुरवासियोंका अनुराग देखकर  
दुर्योधनकी चिन्ता ... ४२९  
१४१-दुर्योधनका धृतराष्ट्रसे पाण्डवोंको वारणावत  
भेज देनेका प्रस्ताव ... ४३२  
१४२-धृतराष्ट्रके आदेशसे पाण्डवोंकी वारणावत-यात्रा ४३४  
१४३-दुर्योधनके आदेशसे पुरोचनका वारणावत-नगर-  
में लाक्षागृह बनाना ... ४३५  
१४४-पाण्डवोंकी वारणावत-यात्रा तथा उनको विदुर-  
का गुप्त उपदेश ... ४३६  
१४५-वारणावतमें पाण्डवोंका स्वागत; पुरोचनका  
सत्कारपूर्वक उन्हें ठहराना; लाक्षागृहमें निवासकी  
व्यवस्था और युधिष्ठिर एवं भीमसेनकी बातचीत ४३९  
१४६-विदुरके भेजे हुए स्वनकद्वारा लाक्षागृहमें  
सुरंगका निर्माण ... ४४१  
१४७-लाक्षागृहका दाह और पाण्डवोंका सुरंगके  
रास्ते निकल जाना ... ४४३  
१४८-विदुरजीके भेजे हुए नाविकका पाण्डवोंको  
गङ्गाजीके पार उतारना ... ४४५  
१४९-धृतराष्ट्र आदिके द्वारा पाण्डवोंके लिये शोकप्रकाश  
एवं जलाञ्जलि-दान तथा पाण्डवोंका वनमें प्रवेश ४४६  
१५०-माता कुन्तीके लिये भीमसेनका जल ले आना;  
माता और भाइयोंको भूमिपर सोये देखकर  
भीमका विषाद एवं दुर्योधनके प्रति उनका क्रोध ४४९

### ( हिडिम्बवधपर्व )

- १५१-हिडिम्बके भेजनेसे हिडिम्बा राक्षसीका पाण्डवोंके  
पास आना और भीमसेनसे उसका वार्तालाप ... ४५२  
१५२-हिडिम्बका आना; हिडिम्बाका उससे भयभीत  
होना और भीम तथा हिडिम्बासुरका युद्ध ... ४५५  
१५३-हिडिम्बाका कुन्ती आदिसे अपना मनोभाव प्रकट  
करना तथा भीमसेनके द्वारा हिडिम्बासुरका वध ४५९  
१५४-युधिष्ठिरका भीमसेनको हिडिम्बाके वधसे रोकना;  
हिडिम्बाकी भीमसेनके लिये प्रार्थना; भीमसेन और  
हिडिम्बाका मिलन तथा धटोल्कचकी उत्पत्ति ... ४६१  
१५५-पाण्डवोंको व्यासजीका दर्शन और उनका  
एकचक्रा नगरीमें प्रवेश ... ४६७

### ( वक्रवधपर्व )

- १५६-ब्राह्मणपरिवारका कष्ट दूर करनेके लिये  
कुन्तीकी भीमसेनसे बातचीत तथा ब्राह्मणके  
चिन्तापूर्ण उद्गार ... ४६९  
१५७-ब्राह्मणीका स्वयं मरनेके लिये उद्यत होकर  
पतिसे जीवित रहनेके लिये अनुरोध करना ... ४७२  
१५८-ब्राह्मण-कन्याके त्याग और विवेकपूर्ण वचन  
तथा कुन्तीका उन सबके पास जाना ... ४७५  
१५९-कुन्तीके पृथ्वीपर ब्राह्मणका उनसे अपने दुःख-  
का कारण बताना ... ४७६  
१६०-कुन्ती और ब्राह्मणकी बातचीत ... ४७८  
१६१-भीमसेनको राक्षसके पास भेजनेके विषयमें  
युधिष्ठिर और कुन्तीकी बातचीत ... ४७९  
१६२-भीमसेनका भोजन-सामग्री लेकर बकासुरके पास  
जाना और स्वयं भोजन करना तथा युद्ध करके  
उसे मार गिराना ... ४८१  
१६३-बकासुरके वधसे राक्षसोंका भयभीत होकर  
पलायन और नगरनिवासियोंकी प्रसन्नता ... ४८३

### ( चैत्ररथपर्व )

- १६४-पाण्डवोंका एक ब्राह्मणसे विचित्र कथाएँ सुनना ४८५  
१६५-द्रोणके द्वारा द्रुपदके अपमानित होनेका वृत्तान्त ४८६  
१६६-द्रुपदके यज्ञसे धृष्टद्युम्न और द्रौपदीकी उत्पत्ति ४८८  
१६७-कुन्तीकी अपने पुत्रोंसे पृथक्कर पञ्चालदेशमें  
जानेकी तैयारी ... ४९४  
१६८-व्यासजीका पाण्डवोंसे द्रौपदीके पूर्वजन्मका  
वृत्तान्त सुनाना ... ४९५  
१६९-पाण्डवोंकी पञ्चाल-यात्रा और अर्जुनके द्वारा  
चित्ररथ गन्धर्वको पराजय एवं उन दोनोंकी मित्रता ४९६  
१७०-सुर्यकन्या तपतीकी देखकर राजा संवरणका  
मोहित होना ... ५०२  
१७१-तपती और संवरणकी बातचीत ... ५०५  
१७२-वसिष्ठजीकी सहायतासे राजा संवरणको  
तपतीकी प्राप्ति ... ५०७  
१७३-गन्धर्वका वसिष्ठजीकी महत्ता बताते हुए किसी श्रेष्ठ  
ब्राह्मणको पुरोहित बनानेके लिये आग्रह करना ५१०  
१७४-वसिष्ठजीके अद्भुत धर्मा-बलके आगे  
विश्वामित्रजीका पराभव ... ५११  
१७५-शक्तिके शापसे कल्माषपादका राक्षस होना;  
विश्वामित्रकी प्रेरणासे राक्षसद्वारा वसिष्ठके  
पुत्रोंका भक्षण और वसिष्ठका शोक ... ५१६  
१७६-कल्माषपादका शापसे उद्धार और वसिष्ठजीके  
द्वारा उन्हें अदमक नामक पुत्रकी प्राप्ति ... ५१९  
१७७-शक्तिपुत्र पराशरका जन्म और पिताकी मृत्युका  
हाल सुनकर कुपित हुए पराशरको शान्त करनेके  
लिये वसिष्ठजीका उन्हें और्वोपाख्यान सुनाना ५२३

- १७८-पितरोंद्वारा और्यके क्रोधका निवारण ... ५२४  
 १७९-और्य और पितरोंकी बातचीत तथा और्यका अपनी  
 क्रोधान्गिको बड़वानलरूपसे समुद्रमें त्यागना ५२६  
 १८०-पुलस्त्य आदि महर्षियोंके समझानेसे पराशरजीके  
 द्वारा राक्षससत्त्वकी समाप्ति ... ५२८  
 १८१-राजा कल्माषपादको ब्राह्मणी आङ्गिरसीका शाप ५२९  
 १८२-पाण्डवोंका धौम्यको अपना पुरोहित बनाना ... ५३१

### ( स्वयंवरपर्व )

- १८३-पाण्डवोंकी पञ्चाल-यात्रा और मार्गमें  
 ब्राह्मणोंसे बातचीत ... ५३२  
 १८४-पाण्डवोंका द्रुपदकी राजधानीमें जाकर कुम्हारके  
 यहाँ रहना, स्वयंवरसभाका वर्णन तथा  
 धृष्टद्युम्नकी घोषणा ... ५३४  
 १८५-धृष्टद्युम्नका द्रौपदीके स्वयंवरमें आये हुए  
 राजाओंका परिचय देना ... ५३७  
 १८६-राजाओंका लक्ष्यवेधके लिये उद्योग और  
 असफल होना ... ५३८  
 १८७-अर्जुनका लक्ष्यवेध करके द्रौपदीको प्राप्त करना ५४१  
 १८८-द्रुपदको मारनेके लिये उद्यत हुए राजाओंका  
 सामना करनेके लिये भीम और अर्जुनका  
 उद्यत होना और उनके विषयमें भगवान्  
 श्रीकृष्णका बलरामजीसे वार्तालाप ... ५४४  
 १८९-अर्जुन और भीमसेनके द्वारा कर्ण तथा  
 शल्यकी पराजय और द्रौपदीसहित भीम-  
 अर्जुनका अपने डेरेपर जाना ... ५४६  
 १९०-कुन्ती, अर्जुन और युधिष्ठिरकी बातचीत, पाँचों  
 पाण्डवोंका द्रौपदीके साथ विवाहका विचार तथा  
 बलराम और श्रीकृष्णकी पाण्डवोंसे भेंट ... ५४९  
 १९१-धृष्टद्युम्नका गुप्तरूपसे वहाँकी सब हाल देखकर  
 राजा द्रुपदके पास आना तथा द्रौपदीके  
 विषयमें द्रुपदका प्रश्न ... ५५२

### ( वैवाहिकपर्व )

- १९२-धृष्टद्युम्नके द्वारा द्रौपदी तथा पाण्डवोंका हाल  
 सुनकर राजा द्रुपदका उनके पास पुरोहितको  
 भोजना तथा पुरोहित और युधिष्ठिरकी बातचीत ५५४  
 १९३-पाण्डवों और कुन्तीका द्रुपदके घरमें जाकर  
 सम्मानित होना और राजा द्रुपदद्वारा पाण्डवों-  
 के शील-स्वभावकी परीक्षा ... ५५७  
 १९४-द्रुपद और युधिष्ठिरकी बातचीत तथा व्यासजी-  
 का आगमन ... ५५९  
 १९५-व्यासजीके सामने द्रौपदीका पाँच पुरुषोंसे  
 विवाह होनेके विषयमें द्रुपद, धृष्टद्युम्न और  
 युधिष्ठिरका अपने-अपने विचार व्यक्त करना ५६२

- १९६-व्यासजीका द्रुपदको पाण्डवों तथा द्रौपदीके  
 पूर्वजन्मकी कथा सुनाकर दिव्य दृष्टि देना और  
 द्रुपदका उनकी दिव्य रूपोंकी श्लाकी करना ... ५६४  
 १९७-द्रौपदीका पाँचों पाण्डवोंके साथ विवाह ... ५६९  
 १९८-कुन्तीका द्रौपदीको उपदेश और आशीर्वाद तथा  
 भगवान् श्रीकृष्णका पाण्डवोंके लिये उपहार  
 भोजना ... ५७१

### ( विदुरागमनराज्यलम्भपर्व )

- १९९-पाण्डवोंके विवाहसे दुर्योधन आदिकी चिन्ता,  
 धृतराष्ट्रका पाण्डवोंके प्रति प्रेमका दिखावा और  
 दुर्योधनकी कुमन्त्रणा ... ५७२  
 २००-धृतराष्ट्र और दुर्योधनकी बातचीत, शत्रुओंको  
 वशमें करनेके उपाय ... ५७७  
 २०१-पाण्डवोंको पराक्रमसे दबानेके लिये कर्ण-  
 की सम्मति ... ५७९  
 २०२-भीष्मकी दुर्योधनसे पाण्डवोंको आधा राज्य  
 देनेकी सलाह ... ५८०  
 २०३-द्रोणाचार्यकी पाण्डवोंको उपहार भेजने और  
 बुलानेकी सम्मति तथा कर्णके द्वारा उनकी  
 सम्मतिका विरोध करनेपर द्रोणाचार्यकी फटकार ५८२  
 २०४-विदुरजीकी सम्मति—द्रोण और भीष्मके वचनों-  
 का ही समर्थन ... ५८४  
 २०५-धृतराष्ट्रकी आज्ञासे विदुरका द्रुपदके यहाँ जाना  
 और पाण्डवोंको हस्तिनापुर भेजनेका  
 प्रस्ताव करना ... ५८६  
 २०६-पाण्डवोंका हस्तिनापुरमें आना और आधा  
 राज्य पाकर इन्द्रप्रस्थ नगरका निर्माण करना  
 एवं भगवान् श्रीकृष्ण और बलरामजीका  
 द्वारकाके लिये प्रस्थान ... ५८८  
 २०७-पाण्डवोंके यहाँ नारदजीका आगमन और उनमें  
 फूट न हो इसके लिये कुछ नियम बनानेके  
 लिये प्रेरणा करके सुन्द और उपसुन्दकी कथा-  
 को प्रस्तावित करना ... ५९७  
 २०८-सुन्द-उपसुन्दकी तपस्या, ब्रह्माजीके द्वारा उन्हें  
 वर प्राप्त होना और दैत्योंके यहाँ आनन्दोत्सव ६००  
 २०९-सुन्द और उपसुन्दद्वारा क्रूरतापूर्ण कर्मोंसे  
 त्रिलोकीपर विजय प्राप्त करना ... ६०२  
 २१०-तिलोत्तमाकी उत्पत्ति, उसके रूपका आकर्षण  
 तथा सुन्दोपसुन्दको मोहित करनेके लिये उसका  
 प्रस्थान ... ६०४  
 २११-तिलोत्तमापर मोहित होकर सुन्द-उपसुन्दका  
 आपसमें लड़ना और मारा जाना एवं तिलोत्तमा-  
 को ब्रह्माजीद्वारा वर-प्राप्ति तथा पाण्डवोंका  
 द्रौपदीके विषयमें नियम-निर्धारण ... ६०६

## ( अर्जुनवनवासपर्व )

- २१२-अर्जुनके द्वारा ब्राह्मणके गोधनकी रक्षाके लिये नियमभङ्ग और वनकी ओर प्रस्थान ... ६०८
- २१३-अर्जुनका गङ्गाद्वारमें ठहरना और वहाँ उनका उद्धारीके साथ मिलन ... ६११
- २१४-अर्जुनका पूर्वदिशाके तीर्थोंमें भ्रमण करते हुए मणिपूरमें जाकर चित्राङ्गदाका पाणिग्रहण करके उसके गर्भसे एक पुत्र उत्पन्न करना ... ६१३
- २१५-अर्जुनके द्वारा वर्गा अप्सराका ग्राह्योनिसे उद्धार तथा वर्गाकी आत्मकथाका आरम्भ ... ६१५
- २१६-वर्गाकी प्रार्थनासे अर्जुनका शेष चारों अप्सराओंको भी शापमुक्त करके मणिपूर जाना और चित्राङ्गदासे मिलकर गोकर्ण तीर्थको प्रस्थान करना ... ६१७
- २१७-अर्जुनका प्रभासतीर्थमें श्रीकृष्णसे मिलना और उन्हींके साथ उनका रैवतक पर्वत एवं द्वारकापुरीमें आना ... ६१९

## ( सुभद्राहरणपर्व )

- २१८-रैवतक पर्वतके उत्सवमें अर्जुनका सुभद्रापर आसक्त होना और श्रीकृष्ण तथा युधिष्ठिरकी अनुमतिसे उसे हर ले जानेका निश्चय करना ६२१
- २१९-यादवोंकी युद्धके लिये तैयारी और अर्जुनके प्रति बलरामजीके क्रोधपूर्ण उद्धार ... ६२३

## ( हरणाहरणपर्व )

- २२०-द्वारकामें अर्जुन और सुभद्राका विवाह, अर्जुनके इन्द्रप्रस्थ पहुँचनेपर श्रीकृष्ण आदिका दहेज लेकर वहाँ जाना, द्रौपदीके पुत्र एवं अभिमन्युके जन्म-संस्कार और शिक्षा ... ६२५

## ( खाण्डवदाहपर्व )

- २२१-युधिष्ठिरके राज्यकी विशेषता, कृष्ण और अर्जुनका खाण्डववनमें जाना तथा उन दोनोंके पास ब्राह्मण-वेपथारी अग्निदेवका आगमन ... ६३१

- २२२-अग्निदेवका खाण्डववनको जलानेके लिये श्रीकृष्ण और अर्जुनसे सहायताकी याचना करना; अग्निदेव उस वनको क्यों जलाना चाहते थे; इसे बतानेके प्रसङ्गमें राजा श्वेतकिकी कथा ... ६३४
- २२३-अर्जुनका अग्निकी प्रार्थना स्वीकार करके उनसे दिव्य धनुष एवं रथ आदि माँगना ... ६३९
- २२४-अग्निदेवका अर्जुन और श्रीकृष्णको दिव्य धनुष; अश्वय तरकस; दिव्य रथ और चक्र आदि प्रदान करना तथा उन दोनोंकी सहायतासे खाण्डववन-को जलाना ... ६४०
- २२५-खाण्डववनमें जलते हुए प्राणियोंकी दुर्दशा और इन्द्रके द्वारा जल बरसाकर आग बुझानेकी चेष्टा ६४३
- २२६-देवताओं आदिके साथ श्रीकृष्ण और अर्जुनका युद्ध ६४५

## ( मयदर्शनपर्व )

- २२७-देवताओंकी पराजय; खाण्डववनका विनाश और मयासुरकी रक्षा ... ६४८
- २२८-शार्ङ्गकोपाख्यान—मन्दपाल मुनिके द्वारा जरिता-शार्ङ्गकासे पुत्रोंकी उत्पत्ति और उन्हें बचानेके लिये मुनिका अग्निदेवकी स्तुति करना ... ६५१
- २२९-जरिताका अपने बच्चोंकी रक्षाके लिये चिन्तित होकर विलाप करना ... ६५४
- २३०-जरिता और उसके बच्चोंका संवाद ... ६५५
- २३१-शार्ङ्गकोंके स्तवनसे प्रसन्न होकर अग्निदेवका उन्हें अभय देना ... ६५७
- २३२-मन्दपालका अपने बाल-बच्चोंसे मिलना ... ६५९
- २३३-इन्द्रदेवका श्रीकृष्ण और अर्जुनको वरदान तथा श्रीकृष्ण, अर्जुन और मयासुरका अग्निसे विदा लेकर एक साथ यमुनातटपर बैठना ... ६६१

## चित्र-सूची

## ( तिरंगा )

- |                              |     |   |     |
|------------------------------|-----|---|-----|
| १-नमस्कार ...                | १   | ४-कुमार भीमसेनका साँपोंपर कोप ...                 | २८३ |
| २-अवतारके लिये प्रार्थना ... | १८३ | ५-एकलव्यकी गुरु-दक्षिणा ...                       | ३९७ |
| ३-सिंह-बाधोंमें बालक भरत ... | २०१ | ६-द्रौपदी-स्वयंवर ...                             | ५४१ |
|                              |     | ७-प्रभासक्षेत्रमें श्रीकृष्ण और अर्जुनका मिलन ... | ५९७ |



## भीमरः सभापर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
( सभाक्रियापर्व )					
१-	भगवान् श्रीकृष्णकी आशुके अनुसार मयासुर- द्वारा सभाभवन बनानेकी तैयारी	... ६६५	१९-	चण्डकौशिक मुनिके द्वारा जरासंधका भविष्य- कथन तथा पिताके द्वारा उसका राज्याभिषेक करके वनमें जाना	... ७२०
२-	श्रीकृष्णकी द्वारका-यात्रा	... ६६७	( जरासंधवधपर्व )		
३-	मयासुरका भीमसेन और अर्जुनको गदा और शङ्ख लाकर देना तथा उसके द्वारा अद्भुत सभाका निर्माण	... ६६९	२०-	युधिष्ठिरके अनुमोदन करनेपर श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेनकी मगध-यात्रा	... ७२२
४-	मयद्वारा निर्मित सभाभवनमें धर्मराजयुधिष्ठिरका प्रवेश तथा सभामें स्थित महर्षियों और राजाओं आदिका वर्णन	... ६७२	२१-	श्रीकृष्णद्वारा मगधकी राजधानीकी प्रशंसा, चैत्यक पर्वतशिखर और नगाड़ोंको तोड़-फोड़- कर तीनोंका नगर एवं राजभवनमें प्रवेश तथा श्रीकृष्ण और जरासंधका संवाद	... ७२४
( लोकपालसभाख्यानपर्व )			२२-	जरासंध और श्रीकृष्णका संवाद तथा जरासंध- की युद्धके लिये तैयारी एवं जरासंधका श्रीकृष्ण- के साथ वैर होनेके कारणका वर्णन	... ७२८
५-	नारदजीका युधिष्ठिरकी सभामें आगमन और प्रश्नके रूपमें युधिष्ठिरको शिक्षा देना	... ६७५	२३-	जरासंधका भीमसेनके साथ युद्ध करनेका निश्चय, भीम और जरासंधका भयानक युद्ध तथा जरासंधकी थकावट	... ७३३
६-	युधिष्ठिरकी दिव्य सभाओंके विषयमें जिज्ञासा	६८५	२४-	भीमके द्वारा जरासंधका वध, बंदी राजाओंकी मुक्ति, श्रीकृष्ण आदिका भेंट लेकर इन्द्रप्रस्थमें आना और वहाँसे श्रीकृष्णका द्वारका जाना	... ७३६
७-	इन्द्रसभाका वर्णन	... ६८७	( दिग्विजयपर्व )		
८-	यमराजकी सभाका वर्णन	... ६८९	२५-	अर्जुन आदि चारों भाइयोंकी दिग्विजयके लिये यात्रा	... ७४१
९-	वरुणकी सभाका वर्णन	... ६९१	२६-	अर्जुनके द्वारा अनेक देशों, राजाओं तथा भगदत्तकी पराजय	... ७४३
१०-	कुबेरकी सभाका वर्णन	... ६९३	२७-	अर्जुनका अनेक पर्वतीय देशोंपर विजय पाना	७४४
११-	ब्रह्माजीकी सभाका वर्णन	... ६९५	२८-	किम्बुरुष, हाटक तथा उत्तरकुरुपर विजय प्राप्त करके अर्जुनका इन्द्रप्रस्थ लौटना	... ७४६
१२-	राजा हरिश्चन्द्रका माहात्म्य तथा युधिष्ठिरके प्रति राजा पाण्डुका संदेश	... ६९९	२९-	भीमसेनका पूर्वदिशाको जीतनेके लिये प्रस्थान और विभिन्न देशोंपर विजय पाना	... ७५१
( राजसूयारम्भपर्व )			३०-	भीमका पूर्वदिशाके अनेक देशों तथा राजाओं- को जीतकर भारी धन-सम्पत्तिके साथ इन्द्रप्रस्थमें लौटना	... ७५२
१३-	युधिष्ठिरका राजसूयविषयक संकल्प और उसके विषयमें भाइयों, मन्त्रियों, मुनियों तथा श्रीकृष्णसे सलाह लेना	... ७०२	३१-	सहदेवके द्वारा दक्षिण दिशाकी विजय	... ७५४
१४-	श्रीकृष्णकी राजसूययज्ञके लिये सम्मति	... ७०६	३२-	नकुलके द्वारा पश्चिम दिशाकी विजय	... ७५५
१५-	जरासंधके विषयमें राजा युधिष्ठिर, भीम और श्रीकृष्णकी बातचीत	... ७११			
१६-	जरासंधको जीतनेके विषयमें युधिष्ठिरके उत्साह- हीन होनेपर अर्जुनका उत्साहपूर्ण उद्गार	... ७१३			
१७-	श्रीकृष्णके द्वारा अर्जुनकी बातका अनुमोदन तथा युधिष्ठिरको जरासंधकी उत्पत्तिका प्रसङ्ग सुनाना	... ७१४			
१८-	जरा राक्षसीका अपना परिचय देना और उसीके नामपर बालकका नामकरण होना	... ७१९			

## ( राजसूयपर्व )

- ३३-युधिष्ठिरके शासनकी विशेषता; श्रीकृष्णकी आज्ञासे युधिष्ठिरका राजसूययज्ञकी दीक्षा लेना तथा राजाओं; ब्राह्मणों एवं सगे-सम्बन्धियोंको बुलानेके लिये निमन्त्रण भेजना ... ७६६
- ३४-युधिष्ठिरके यज्ञमें सब देशके राजाओं; कौरवों तथा यादवोंका आगमन और उन सबके भोजन-विश्राम आदिकी सुव्यवस्था ... ७७०
- ३५-राजसूययज्ञका वर्णन ... ७७२

## ( अर्घाभिहरणपर्व )

- ३६-राजसूययज्ञमें ब्राह्मणों तथा राजाओंका समागम; श्रीनारदजीके द्वारा श्रीकृष्ण-महिमाका वर्णन और भीष्मजीकी अनुमतिसे श्रीकृष्णकी अग्रपूजा ... ७७४
- ३७-शिशुपालके आक्षेपपूर्ण वचन ... ७७६
- ३८-युधिष्ठिरका शिशुपालको समझाना और भीष्मजीका उसके आक्षेपोंका उत्तर देना ... ७७९
- ३९-सहदेवकी राजाओंको चुनौती तथा धुव्व हुए शिशुपाल आदि नरेशोंका युद्धके लिये उद्यत होना ... ८२६

## ( शिशुपालवधपर्व )

- ४०-युधिष्ठिरकी चिन्ता और भीष्मजीका उन्हें सान्त्वना देना ... ८२८
- ४१-शिशुपालद्वारा भीष्मकी निन्दा ... ८२९
- ४२-शिशुपालका बातोंपर भीमसेनका क्रोध और भीष्मजीका उन्हें शान्त करना ... ८३२
- ४३-भीष्मजीके द्वारा शिशुपालके जन्मके वृत्तान्तका वर्णन ८३३
- ४४-भीष्मकी बातोंसे चिढ़े हुए शिशुपालका उन्हें फटकारना तथा भीष्मका श्रीकृष्णसे युद्ध करनेके लिये समस्त राजाओंको चुनौती देना ... ८३५
- ४५-श्रीकृष्णके द्वारा शिशुपालका वध; राजसूययज्ञकी समाप्ति तथा सभी ब्राह्मणों; राजाओं और श्रीकृष्णका स्वदेश-गमन ... ८३८

## ( द्यूतपर्व )

- ४६-व्यासजीकी भविष्यवाणीसे युधिष्ठिरकी चिन्ता और समत्वपूर्ण वर्ताव करनेकी प्रतिज्ञा ... ८४५
- ४७-दुर्योधनका मयनिर्मित सभाभवनको देखना और पग-पगपर भ्रमके कारण उपहासका पात्र बनना तथा युधिष्ठिरके वैभवको देखकर उसका चिन्तित होना ... ८४७

- ४८-पाण्डवोंपर विजय प्राप्त करनेके लिये शकुनि और दुर्योधनकी बातचीत ... ८५०
- ४९-धृतराष्ट्रके पूछनेपर दुर्योधनका अपनी चिन्ता बताना और द्यूतके लिये धृतराष्ट्रसे अनुरोध करना एवं धृतराष्ट्रका विदुरको इन्द्रप्रस्थ जानेका आदेश ८५२
- ५०-दुर्योधनका धृतराष्ट्रको अपने दुःख और चिन्ताका कारण बताना ... ८५७
- ५१-युधिष्ठिरको भेंटमें मिली हुई वस्तुओंका दुर्योधन-द्वारा वर्णन ... ८५९
- ५२-युधिष्ठिरको भेंटमें मिली हुई वस्तुओंका दुर्योधन-द्वारा वर्णन ... ८६३
- ५३-दुर्योधनद्वारा युधिष्ठिरके अभिषेकका वर्णन ... ८६६
- ५४-धृतराष्ट्रका दुर्योधनको समझाना ... ८६८
- ५५-दुर्योधनका धृतराष्ट्रको उकसाना ... ८६९
- ५६-धृतराष्ट्र और दुर्योधनकी बातचीत; द्यूतक्रीडाके लिये सभानिर्माण और धृतराष्ट्रका युधिष्ठिरको बुलानेके लिये विदुरको आज्ञा देना ... ८७१
- ५७-विदुर और धृतराष्ट्रकी बातचीत ... ८७३
- ५८-विदुर और युधिष्ठिरकी बातचीत तथा युधिष्ठिरका हस्तिनापुरमें जाकर सबसे मिलना ... ८७४
- ५९-जूएके अनौचित्यके सम्बन्धमें युधिष्ठिर और शकुनिका संवाद ... ८७८
- ६०-द्यूतक्रीडाका आरम्भ ... ८८०
- ६१-जूएमें शकुनिके छलसे प्रत्येक दाँवपर युधिष्ठिरकी हार ... ८८१
- ६२-धृतराष्ट्रको विदुरकी चेतावनी ... ८८४
- ६३-विदुरजीके द्वारा जूएका घोर विरोध ... ८८५
- ६४-दुर्योधनका विदुरको फटकारना और विदुरका उसे चेतावनी देना ... ८८६
- ६५-युधिष्ठिरका धन; राज्य; भाइयों तथा द्रौपदी-सहित अपनेको भी हारना ... ८८९
- ६६-विदुरका दुर्योधनको फटकारना ... ८९२
- ६७-प्रातिकामीके बुलानेसे न आनेपर दुःशासनका सभा-में द्रौपदीको केश पकड़कर घसीटकर लाना एवं सभासदोंसे द्रौपदीका प्रश्न ... ८९४
- ६८-भीमसेनका क्रोध एवं अर्जुनका उन्हें शान्त करना; विकर्णकी धर्मसङ्गत बातका कर्णके द्वारा विरोध; द्रौपदीका चीरहरण एवं भगवान्द्वारा उसकी लज्जा-रक्षा तथा विदुरके द्वारा प्रह्लादका उदाहरण देकर सभासदोंको विरोधके लिये प्रेरित करना ... ८९९

- ६९-द्रौपदीका चेतावनीयुक्त विलाप एवं भीष्मका वचन ९०६  
 ७०-दुर्योधनके छल-कपटयुक्त वचन और भीमसेनका रोपपूर्ण उद्गार ... ९०८  
 ७१-कर्ण और दुर्योधनके वचन; भीमसेनकी प्रतिज्ञा; विदुरकी चेतावनी और द्रौपदीको धृतराष्ट्रसे वर-प्राप्ति ९०९  
 ७२-शत्रुओंको मारनेके लिये उद्यत हुए भीमको युधिष्ठिरका शान्त करना ... ९१३  
 ७३-धृतराष्ट्रका युधिष्ठिरको सारा धन लौटाकर एवं समझा-बुझाकर इन्द्रप्रस्थ जानेका आदेश देना ९१४  
 ( अनुद्यतपर्व )  
 ७४-दुर्योधनका धृतराष्ट्रसे अर्जुनकी वीरता बतलाकर पुनः द्यूतक्रीडाके लिये पाण्डवोंको बुलानेका अनुरोध और उनकी स्वीकृति ... ९१६  
 ७५-गान्धारीकी धृतराष्ट्रको चेतावनी और धृतराष्ट्रका अस्वीकार करना ... ९२२  
 ७६-सबके मना करनेपर भी धृतराष्ट्रकी आज्ञासे युधिष्ठिरका पुनः जूआ खेलना और हारना ... ९२३  
 ७७-दुःशासनद्वारा पाण्डवोंका उपहास एवं भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेवकी शत्रुओंको मारनेके लिये भीषण प्रतिज्ञा ... ९२५  
 ७८-युधिष्ठिरका धृतराष्ट्र आदिसे विदा लेना; विदुरका कुन्तीको अपने यहाँ रखनेका प्रस्ताव और पाण्डवोंको धर्मपूर्वक रहनेका उपदेश देना ... ९२९  
 ७९-द्रौपदीका कुन्तीसे विदा लेना तथा कुन्तीका विलाप एवं नगरके नर-नारियोंका शोकातुर होना ... ९३०  
 ८०-वनगमनके समय पाण्डवोंकी चेष्टा और प्रजाजनोंकी शोकातुरताके विषयमें धृतराष्ट्र तथा विदुरका संवाद और शरणागत कौरवोंकी द्रोणाचार्यका आश्वासन ... ९३५  
 ८१-धृतराष्ट्रकी चिन्ता और उनका संजयके साथ वार्तालाप ९४०

## चित्र-सूची

### ( तिरंगा )

- १-श्रीकृष्णका मयासुरसे सभानिर्माणके लिये प्रस्ताव ... ६६५  
 २-वृन्दावनमें श्रीकृष्ण ... ७९७

### ( सादा )

- ३-पाण्डवोंद्वारा देवर्षि नारदका पूजन ... ६७६  
 ४-जरासंधके भवनमें श्रीकृष्ण, भीमसेन और अर्जुन ... ७२६  
 ५-भीमसेन और जरासंधका युद्ध ... ७२६  
 ६-भीष्मका युधिष्ठिरको श्रीकृष्णकी महिमा बताना ... ७७७

- ७-शिशुपालका युद्धके लिये उद्योग ... ७७७  
 ८-भूमिका भगवान्को अदितिके कुण्डल देना ... ८०८  
 ९-शिशुपालके वधके लिये भगवान्का हाथमें चक्र ग्रहण करना ... ८४०  
 १०-दुर्योधनका स्थलके भ्रमसे जलमें गिरना ... ८४०  
 ११-द्यूत-क्रीडामें युधिष्ठिरकी पराजय ... ८९२  
 १२-दुःशासनका द्रौपदीके केश पकड़कर खींचना ... ८९२  
 १३-द्रौपदी-चर-हरण ... ९०३  
 १४-गान्धारीका धृतराष्ट्रको समझाना ... ९२२  
 १५-( ४३ इकरंगे लाइन चित्र फरमोंमें )

### ( सभापर्व सम्पूर्ण )

